नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वैश्विक व्यापार का नया द्वार बनता मध्यप्रदेश

इंदौर में आयोजित इंडिया-लैटिन अमेरिका एंड कैरेबियन (एलएसी) ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट फोरम केवल एक व्यापारिक सम्मेलन नहीं था, बल्कि यह मध्यप्रदेश की बदलती आर्थिक पहचान और वैश्विक मंच पर उसकी बढ़ती भूमिका का महत्वपूर्ण संकेत भी है. जिस प्रदेश को कभी मुख्यतः कृषि आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में देखा जाता था, वह आज अंतरराष्ट्रीय निवेश, निर्यात और औद्योगिक साझेदारी का एक उभरता हुआ केंद्र बनकर सामने आ रहा है.

मध्यप्रदेश से लैटिन अमेरिकी और कैरेबियन देशों को होने वाला निर्यात 19 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 3,835 करोड़ रुपए तक पहुंच जाना इस परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण है. यह आंकड़ा केवल व्यापारिक उपलब्धि नहीं, बल्कि प्रदेश की उत्पादन क्षमता, औद्योगिक विस्तार और वैश्विक बाजारों में बढ़ती स्वीकार्यता का संकेतक भी है. ऐसे समय में जब दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं नए व्यापारिक साझेदारों और आपूर्ति श्रृंखलाओं की तलाश में हैं, मध्यप्रदेश के लिए यह अवसर अत्यंत महत्वपूर्ण है.

भारत और एलएसी देशों के बीच वर्तमान में लगभग 50 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार होता है. इसे अगले पांच वर्षों में 100 अरब डॉलर तक पहुंचाने का लक्ष्य महत्वाकांक्षी अवश्य है, लेकिन असंभव नहीं. वैश्विक अर्थव्यवस्था में हो रहे बदलावों ने भारत और लैटिन अमेरिकी देशों को एक-दूसरे के और करीब आने का अवसर दिया है. दोनों क्षेत्रों के पास विशाल उपभोक्ता बाजार, प्राकृतिक संसाधन, युवा आबादी और विकास की अपार संभावनाएं हैं. ऐसे में व्यापार और निवेश का विस्तार दोनों पक्षों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है.

मध्यप्रदेश की विशेषता यह है कि उसके पास विविध क्षेत्रों में निवेश और निर्यात की मजबूत संभावनाएं मौजूद हैं. फार्मास्यूटिकल्स, ऑटोमोबाइल, इंजीनियरिंग उत्पाद, प्लास्टिक, आईटी, स्टार्टअप और कृषि आधारित उद्योगों में प्रदेश ने उल्लेखनीय प्रगति की है. इंदौर, पीथमपुर, भोपाल, उज्जैन और ग्वालियर जैसे औद्योगिक केंद्र अब केवल घरेलू बाजार तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक व्यापार नेटवर्क का हिस्सा बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं.

फोरम में आयोजित बिजनेस-टू-बिजनेस और वन-टू-वन बैठकों का महत्व भी कम नहीं है. अक्सर अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सबसे बड़ी बाधा संवाद और संपर्क की कमी होती है. जब उद्यमियों को सीधे बातचीत और साझेदारी के अवसर मिलते हैं, तो निवेश और व्यापारिक समझौतों की संभावनाएं कई गुना बढ़ जाती हैं. इंदौर में ऐसा मंच उपलब्ध कराना प्रदेश की आर्थिक कूटनीति की परिपक्वता को दर्शाता है.

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का यह कथन भी उल्लेखनीय है कि भारत और लैटिन अमेरिकी देशों के बीच भौगोलिक दूरी भले अधिक हो, लेकिन सांस्कृतिक मूल्य और जीवन दर्शन में अनेक समानताएं हैं. आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था में केवल उत्पाद और पूंजी ही नहीं, बल्कि विश्वास और सांस्कृतिक निकटता भी व्यापारिक संबंधों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

मध्यप्रदेश यदि इसी प्रकार आधारभूत ढांचे, लॉजिस्टिक्स, कौशल विकास और निवेश-अनुकूल नीतियों पर निरंतर ध्यान देता है, तो वह केवल भारत का नहीं, बल्कि वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) के देशों के लिए भी एक महत्वपूर्ण व्यापारिक प्रवेश द्वार बन सकता है. इंदौर का यह फोरम इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो प्रदेश को 'विकसित मध्यप्रदेश 2047' के लक्ष्य की ओर और अधिक मजबूती से आगे बढ़ाने की क्षमता रखता है.

टीएमसी में अस्तित्व की लड़ाई पर घमासान

कृष्णमोहन झा

> पश्चिम बंगाल की मार्क्सवादी पार्टी से अपनी राजनीति की शुरुआत करने वाले ऋतव्रत बनर्जी बाद में तृणमूल कांग्रेस में शामिल हो गये थे और जल्द ही उन्होंने ममता बनर्जी का विश्वास भी हासिल कर लिया था परंतु ममता बनर्जी के भतीजे और तृणमूल कांग्रेस के दूसरे सबसे बड़े नेता अभिषेक बनर्जी का पार्टी के अंदर वर्चस्व को उन्हें रास नहीं आया. गौर तलब है कि अभिषेक बनर्जी ने पार्टी में जिस कारपोरेट संस्कृति को बढ़ावा दिया वह तृणमूल कांग्रेस के क ई वरिष्ठ नेताओं के असंतोष की बड़ी वजह बनी. पार्टी के असंतुष्ट नेताओं में पश्चिम बंगाल से निर्वाचित लोकसभा सदस्य काकोली घोष दस्तीकार भी शामिल हैं जिन्हें ममता बनर्जी ने विधान सभा चुनावों में पार्टी में करारी हार के बाद लोकसभा में पार्टी की चीफ़ व्हिप के पद से हटा दिया था. इसके बाद काकोली घोष ने पार्टी में सभी संगठनात्मक पदों से इस्तीफा दे दिया था. काकोली घोष ने लोकसभा में पार्टी के वरिष्ठ सदस्य कल्याण बनर्जी पर उनके साथ दुर्व्यवहार के आरोप भी लगाए. तृणमूल कांग्रेस की चुनावी रणनीतिकार संस्था आई पैक को अभिषेक बनर्जी के संरक्षण ने भी तृणमूल कांग्रेस के अंदर असंतोष को और बढावा दिया.

पश्चिम बंगाल में लगातार पंद्रह वर्षों तक सत्ता में रही तृणमूल कांग्रेस को हाल के विधानसभा चुनावों में मिली करारी हार ने अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ने के लिए मजबूर कर दिया है. तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो और पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पार्टी को टूटने से बचाने के लिए यद्यपि हरसंभव प्रयास कर रही हैं लेकिन हाल के पार्टी के अंदर चल रहे घटना क्रम से तो इसी नतीजे पर पहुंचा जा सकता है कि पार्टी के अस्तित्व पर आए इस गंभीर संकट को टालना ममता बनर्जी के लिए अब लगभग नामुमकिन जैसा हो गया है.

राज्य में पहली बार सत्ता में आई भारतीय जनता पार्टी के प्रति आकर्षित होने वाले तृणमूल कांग्रेस के नवनिर्वाचित विधायकों की संख्या में जिस तरह तेजी से इजाफा हो रहा है उससे ममता बनर्जी बेहद परेशान दिखाई दे रही हैं.राजनीति के इस मोड पर तृणमूल कांग्रेस में ममता बनर्जी के साथ खड़े दिखाई देने से उनकी ही पार्टी के अधिकांश नेता जिस तरह परहेज कर रहे हैं उससे यह कहावत याद आ जाती है कि लोग ऊगते सूर्य को ही नमस्कार करते हैं. जब वे धरना देती हैं. आज यह स्थिति बन चुकी है कि उनके साथ धरने पर बैठने के लिए तृणमूल कांग्रेस के मुट्ठी भर विधायक ही जुटते हैं. ममता बनर्जी के द्वारा विगत दिनों पार्टी विधायक दल की जो बैठक बुलाई गई थी उस बैठक में भी मात्र 20 विधायकों ने ही अपनी उपस्थिति दर्ज कराना जरूरी समझा. पार्टी में फूट के संकेत वहीं से मिलने लगे थे ममता बनर्जी के लिए निसंदेह यह चिंता का विषय है कि 28 साल पहले कांग्रेस से अलग होकर उन्होंने जिस तृणमूल कांग्रेस की नींव रखी थी उसमें उनको ही अलग थलग करने की कोशिश करने वाले पार्टी नेताओं की संख्या रोज बढ़ रही है और गौरतलब बात तो यह है कि पार्टी में उनके वर्चस्व को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से चुनौती देने वाले नेता अपनी कोशिशों में लगातार सफल भी हो रहे हैं. यह भी कम दिलचस्प बात नहीं है कि तृणमूल कांग्रेस के ऐसे कई नेता राज्य में पहली बार सत्ता में आई भाजपा सरकार के संपर्क में भी बने हुए हैं. इसीलिए ममता बनर्जी को यह चिंता सताना स्वाभाविक है कि अतीत में महाराष्ट्र में जिस तरह एकनाथ शिंदे और अजित पवार की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं ने शिवसेना और राष्ट्र वादी कांग्रेस को दो फाड़ कर दिया था उसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना कहीं पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस को न करना पडे.

दरअसल तृणमूल कांग्रेस के नवनिर्वाचित 80 विधायकों में से 58 बागी विधायकों द्वारा गत दिवस ऋतव्रत बनर्जी को सर्वसम्मति से अपना नेता चुन लिए जाने के बाद अब ममता बनर्जी को अब इस संशय में नहीं रहना चाहिए कि पार्टी को टूटने से बचाने के लिए उनकी कोई भी योजना अब कारगर साबित हो सकती है. ममता बनर्जी गुट के पास अब तृणमूल कांग्रेस के मात्र 22 विधायक बचे हैं. ये 22 विधायक अब सदन के अंदर विपक्ष में बैठेंगे परंतु यह संख्या 294 सदस्यीय विधानसभा के 10 प्रतिशत से कम होने के कारण उन्हें मान्यता प्राप्त विपक्षी दल का दर्जा नहीं मिल सकेगा. इसके विपरीत बागी गुट के नेता ऋतव्रत बनर्जी को चूंकि 58 विधायकों का समर्थन हासिल है इसलिए विधानसभा अध्यक्ष ने विपक्ष के नेता पद पर उनका दावा स्वीकार कर लिया.

इतना ही, बिना किसी विलंब के उन्हें विधानसभा भवन में विपक्ष के नेता के लिए निर्धारित कक्ष भी आवंटित कर दिया गया. ऋतव्रत बनर्जी ने दावा किया है कि उनका गुट ही असली तृणमूल कांग्रेस है.उन पर दलबदल कानून भी लागू नहीं होगा क्यों इस बागी गुट में तृणमूल कांग्रेस विधायक दल की कुल संख्या 80 के दो तिहाई से अधिक सदस्य शामिल हैं. इसमें दो राय नहीं हो सकती कि यह गुट आगे चलकर तृणमूल कांग्रेस के चुनावचिन्ह और नाम पर भी अपना दावा पेश करने से परहेज नहीं करेगा. गौर तलब है कि ऋतव्रत बनर्जी और सांदीपन साहा को ममता बनर्जी ने पार्टी विरोधी गतिविधियों में संलिप्त होने के आरोप में विगत दिनों तृणमूल कांग्रेस से निष्कासित कर दिया था. ऋतव्रत बनर्जी ने पिछले माह नईदिल्ली स्थित बंग भवन में मुख्य मंत्री सुवेंदु अधिकारी से मुलाक़ात की थी.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

विंध्य की डायरी

ओहदा मिला पर उसमें सादगी का ग्रहण

डॉ. रवि तिवारी

आमतौर पर नेता किसी ऐसे ओहदे की तलाश में रहते हैं जिससे उनका राजनैतिक कद और भविष्य दोनों सुरक्षित हो सके.इस बार विचित्र संयोग रहा है. विंध्य में विकास की धारा को अविरल बनाने के लिए विंध्य विकास प्राधिकरण में राजनैतिक नियुक्ति ऐसे समय हुई जब प्रधानमंत्री ने सरकारों से अपने खर्च को नियंत्रित करने की अपील कर दी.नेताओं ने भी सोचा था कि इस नियुक्ति से आगे के राजनैतिक सफर को सुगमता से आगे बढ़ाएगे. पर बिना दिखावा सूने माहौल में हुए कार्यभार ग्रहण की औपचारिकता ने सपनों के लंबे चौड़े संसार को हासिए में लाकर खड़ा कर दिया है. बिना मजमा,बिना जुलूस हुए इस कार्यक्रम की स्थिति यह थी कि कोई विधायक या सांसद इस मौके पर खुशी व्यक्त करने भी नहीं पहुँचा. कमिश्नर कार्यालय में हुए इस कार्यक्रम के दौरान समर्थक भी नहीं पहुँच पाए . अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष को बैठाकर सारी सरकारी खानापूर्ति कर दी गई.विकास की कल्पना को अमलीजामा पहनाने वाली इस संस्था की इस प्रकार की खानापूर्ति के तरह-तरह के मायने अभी से निकाले जाने लगें हैं. दल के लोग भी इसको लेकर अपने तर्क गढ़ रहे हैं. कुलमिलाकर नए पदाधिकारियों ने सादगी अपनाकर अपने अंक तो बढवा लिए .आगे क्या,कैसे होगा यह समय ही बताएगा.

रार ने चर्चा को दी हवा

सतना नगर निगम में महापौर और निगमायुक्त के बीच रार ने चर्चा के बाजार को गर्म कर दिया.इंजीनियरों के प्रभार को लेकर शुरू हुई इस रणनीतिक जंग में कलेक्टर को ज्ञापन सौपने के घटनाक्रम ने कमजोर राजनैतिक पकड़ को स्पष्ट कर दिया.यह संयोग ही हैं कि इसके पहले सांसद ने भी जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को लेकर मुख्यमंत्री तक की पहल की थी.फिर भी कोई सुनवाई नहीं हुई थी.चर्चा तो यह भी हैं कि इस बार भी मामला प्रभारी मंत्री और मुख्यमंत्री तक जा चुका है. इस मामले में ऊपरी तंत्र की चुप्पी निचले कर्ताधर्ताओं के लिए चिंता का विषय बन गई .हालत यह है कि प्री-मानसून की बारिश में हुए जल जमाव के लिए सफाई कामगारों की भर्ती न होने को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है. अब देखना यह है कि सिस्टम और जनसेवकों की इस रणनीतिक जंग में कौन किसकी पीठ थपथपाता है.

किसानों का विरोध और राजनीति

आदिवासी बहुल जिले सीधी में किसानों को मुआवजा दिए बिना टॉवर लगाए जाने का मामला गम्भीर होता जा रहा है. चुरहट विधायक पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने इसी मामले में मुख्यमंत्री को पत्र लिख मुआवजे की सियासत को गरमा दिया है. पत्र में उन्होंने चेतावनी देते हुए यह अपेक्षा की है कि किसानों की मांगों पर ध्यान दिया जाए नहीं तो कांग्रेस को विवशता में कोई दूसरा कदम उठाना पड़ेगा.

साड्डे नाल से इथेनाल तक का

लगभग 3 दशक पहले दलेर मेहंदी का पंजाबी पॉप सॉन्ग खूब चला था जिसके बोल थे- साड्डे नाल रहोगे तो ऐश करोगे, जिंदगी दे सारे मजे कैश करोगे ! अब लोग साड्डे नाल भूल गए क्योंकि इथेनाल का जमाना आ गया है. जब महाराष्ट्र में शरद पवार की सरकार थी तब उनसे पूछा गया था कि ब्राजील में गाड़ियां गन्ने के रस से बने इथेनाल से चलती हैं. अपने देश में या महाराष्ट्र में ऐसा क्यों नहीं हो सकता तो पवार ने सवाल को टालते हुए कहा था कि अपने यहां इतना गन्ना पैदा ही कहां होता है. उस जमाने में पेट्रोल सस्ता था इसलिए बात आई-गई हो गई. 1986 में 13.60 रु. प्रति लीटर पेट्रोल का दाम था. तब आम तौर पर फिएट और एम्बेसडर जैसी गाड़ियां चला करती थीं और लूना मोपेड लोकप्रिय थी. स्वयं नितिन गडकरी नागपुर से धापेवाडा जाने के लिए लूना इस्तेमाल करते थे. कविवर्य सुरेश भट जब लूना की सवारी करते थे तब ऐसा लगता था कि चूहे पर गणेश बैठे हैं. अब सड़कों पर गाड़ियां बेतहाशा बढ़ गई हैं और पेट्रोल-डीजल के दाम आसमान पर हैं. इसलिए इथेनाल को वैकल्पिक ईंधन के रूप में अपनाया जा रहा है. पेट्रोल में 10 फीसदी इथेनाल तो अनेक वर्षों से मिलाया जा रहा है लेकिन अब ई-85 ईंधन निकला है. इसमें 85 प्रतिशत इथेनाल और 15 प्रतिशत पेट्रोल है. यह ईंधन फ्लेक्स फ्यूल वाहनों के लिए है. पर्यावरण दिवस पर केंद्रीय पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने दिल्ली में इंडियन ऑयल के ई-85 रिटेल आउटलेट पंप का उद्घाटन किया. दावा है कि पेट्रोल से सस्ते इस ईंधन के इस्तेमाल से ग्रीन हाउस गैस में 61 फीसदी की कमी आएगी. प्रदूषण टलेगा तथा किसानों की आय में वृद्धि होगी. इतना ही नहीं, मारुति-सुजुकी ने नई वैगन आर कार पेश की है जो पूरी तरह 100 प्रतिशत इथेनाल पर चल सकती है. इथेनाल सिर्फ गन्ने से नहीं बल्कि मका (कॉर्न), धान, ज्वार आदि से भी बनाया जा सकता है. इस शानदार कारीगरी के पीछे यदि कोई हैं तो वह हैं गडकरी !

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

आखिर क्यों है इतना खास अभी चल रहा अधिक मास

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इस समय अधिक मास चल रहा है इसलिए पंचांग के मुताबिक यह 12 नहीं, बल्कि 13 महीने का साल है. ऐसा क्यों हो रहा है?' हमने कहा, 'हमारे हिंदू पंचांग की रचना चंद्रमा के शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष के अनुसार है. इसमें तिथि घटती-बढ़ती रहती है. चंद्रमा पर आधारित वर्ष 360 दिनों का होता है जबकि अंग्रेजी कैलेंडर 365 दिनों का होता है. हर चौथे वर्ष फरवरी माह 29 दिनों का होता है. तब 366 दिनों का एक वर्ष होता है जिसे लीप ईयर कहते हैं. 2028 में लीप ईयर आएगा. पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा 365.25 दिनों में करती है. इस तरह का तालमेल बिठाने के लिए हर ढाई वर्ष बाद हिंदू पंचांग में अधिक मास आता है. यह एक तरह का करेक्शन है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अधिक मास में शादी-ब्याह, गृहप्रवेश जैसे कार्य नहीं किए जाते लेकिन इसमें भजन, नामस्मरण, भागवत कथा, गीता- रामायण पाठ जैसे आयोजन भरपूर होते हैं.' हमने कहा, 'इसे पुरुषोत्तम मास भी कहा गया है. यह माह प्रेरणा देता है कि हम खुद में भी

करेक्शन करें. क्रोध व द्वेष न करें. शिकायतें कम करें. चुगली व निंदा करने की आदत छोड़ें, संयम से रहें.' दान-धर्म व गरीबों की मदद करें. सत्कर्म करते रहें. प्रेम करें लेकिन मोहग्रस्त न हों. दान दें पर उसका गर्व न करें. दाहिने हाथ ने क्या दिया, इसका पता बाएं हाथ को भी नहीं चलना चाहिए. लालच पर अंकुश रखें. उदारता, विनम्रता, धैर्य और प्रार्थना को अपनाएं. शुभ विचारों को मन में स्थान दें. आत्म कल्याण, समाज कल्याण और राष्ट्र कल्याण की ओर प्रवृत्त हों. नेतृत्व करें लेकिन झूठी अकड़ न दिखाएं. अनावश्यक जल्दबाजी न करते हुए धीरज रखें. कहा गया है- धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय, माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, किसी चीज की अति भी नहीं करनी चाहिए. कहते हैं- अतिकामा दशग्रीव, अतिलोभात दुर्योधन, अति दानात हत:कर्ण, अति सर्वत्र वर्जयेत! याद रखें कि पुरुषोत्तम मास जीवन को नकारने के लिए नहीं बल्कि सुधारने के लिए है. गीता का 15 वां अध्याय 'पुरुषोत्तम योग' कहलाता है. राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तो कृष्ण लीला पुरुषोत्तम !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12281

- डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. खिसकना 2. लीन, मनोयोग से लगा हुआ 3. तावीज, यंत्र, तांत्रिक यंत्र 4. ईद के दिन सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने का स्थान 5. अयोध्या के राजा और श्रीराम के पिता 6. वैद्यक के अनुसार शरीर की वह वायु जिसके विकार से रोग उत्पन्न होते हैं 9. मुसलमानों की मक्का की तीर्थ यात्रा 12. राजा का पद, भाव या काम 14. बाल्यावस्था, चंचलता 15, खबर, संवाद, हल 16. विक्षिप्त 17. नियंत्रित मूल्य पर खाने-पीने की सामग्री मिलने की व्यवस्था 18. सरिता, दरिया 19. कूड़ा, ढेर

बाएं से दाएं

1. वह दामाद जिसे सास-ससुर अपने घर रख लें 5. औषध 7. हमेशा, सदा (सं.) 8. भय, खौफ 10. मीठे कंद का एक पौधा 11. कलेवा, जलपान 12. मार्ग, रास्ता 13. जल से रहित भूमि 15. सजावट, शोभा, सुंदरता 17. किसी देश के राजा या शासक की माता 18. पानी प्राप्त करने के लिए जमीन में गहराई तक पहुंचाया हुआ नल ट्यूबवेल 20. सरकार की ओर से दिया हुआ वह दंड जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित स्थान पर रखा जाता है 21. जांघ. जंघा (उर्दू)

Solution 12280

बे	ल	गा	म		ऊ	स	र
वा		ह	ठ	ध	र्मि	ता	
	पं	क		र्म		ना	द
गं	डा		कं				शा
त	ल	ह	टी		कं	ग	न
व्य		क	ला	कं	द		न
	खु			स	रा	य	
का	ला	पा	नी			मी	ठा

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसायिक कार्यो में परिश्रम अधिक करना पडेगा. व्यय और संतान की चिन्ता से मन अशांत रहेगा. वाणी में कठोरता तथा प्रियजनों के प्रति उदासीनता रहेगी. मान सम्मान के प्रति सचेत रहें. वर्ष के मध्य में सत्ता पक्ष से सुख मिलेगा. प्रभाव बना रहेगा. राजकीय सम्मान की प्राप्ति का योग है. वर्ष के अन्त में प्रतिष में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग रहेगा. नवीन कार्यो के प्रति रूचि रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. भाईयों का सहयोग मिलेगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों के लिये व्यवसायिक कार्यो में परिश्रम अधिक करना पडेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को सत्ता पक्ष से लाभ मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को संतान पक्षर की चिन्ता रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को नियमितता का ध्यान रखना होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्ति का योग है. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य संबंधी पीड़ा हो सकती है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक महत्वाकांक्षी होगा, अपने कामकाज में अच्छी तरह निपुण होगा, बालक को जब क्रोध आयेगा, तो जल्द शांत नहीं होगा, अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, व्यवहार कुशलता रहेगी, अन्याय को सहन नहीं करेगा, खेलों के प्रति रूचि रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

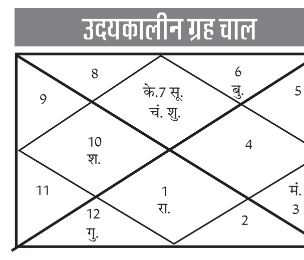

पंचांग

रा.मि. 18 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमीं चन्द्रवासरे रात 9/48, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रातअंत 4/57, विष्कुम्भ योगे प्रातः 5/45 तदुपरि प्रीति योगे रातअंत 4/18, बालव करणे सू.उ. 5/14, सू.अ. 6/46, चन्द्रचार कुम्भ रात 10/55 से मीन, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमीं को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, गुड़ खांड, मूँग, मोठ, दलहन में तेजी होगी, जूट, पाट, बारदाना, सन् आदि मेंउतार चढ़ाव के साथ तेजी होगी, जूट, पाट, सन आदि में घटाबढ़ी होगी, गेहूँ, जौ, चना, का रूख नरमी का रहेगा. भाग्यांक 4254 है.

मेष- जरा सी गलती से बनी बनाई बात बिगड़ सकती है, आकस्मिक लाभ का योग है. नये लोगों से संबंध स्थापित होंगे, पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

वृषभ- आप जिन लोगों को अपना विश्वासपात्र मान रहे हैं, वे नुकसान पहुंचायेंगे, सावधानी रखें, स्वत: के संबंध में चिन्ता रह सकती है, कामकाज अपूर्ण रहेंगे.

मिथुन- आर्थिक दृष्टि से समय उतार चढाव वाला रहेगा, लापरवाहियों के कारण नुकसान होगा, पड़ोसियों से संबंध मधुर होंगे, सम्मान मिलेगा.

कर्क- कार्यस्थल पर अपने व्यवहार को संयमित रखें, कार्य करवाने में आसानी होगी, बांधव विरोध होगा, अचानक नये खर्च सामने आ सकते है.

सिंह- जितनी मेहनत करेंगे, उतना ज्यादा लाभ होगा, यदि आप लंबी यात्रा का प्रयास कर रहे हैं, तो उसमें सफलता मिलेगी, भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी.

कन्या- सफलता के बावजूद निराशा का अनुभव कर सकते हैं, दायित्वों की पूर्ति होगी, अधिकारियों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे, नवीन कार्यो में सुधार होगा.

तुला- अकेलेपन से उबरने में दोस्त आपकी मदद करेंगे, आर्थिक मामलों में किसी तरह का जोखिम न लें, कार्यो की अधिकता से मन चिड़चिडापन रहेगा.

वृश्चिक- बच्चों को जोखिम के कार्यो से दूर रखें, धन लाभ होगा, पारिवारिक सुख समृद्धि बढेगी, निजी दायित्वों की पूर्ति होगी, आर्थिक कार्यो में गति आयेगी.

धनु- कार्यस्थल पर लोग विरोध करेंगे, लेकिन आप चतुराई से काम बना लेंगे, मातृपक्ष से सुखद समाचारों की प्राप्ति होगी, आत्म विश्वास बना रहेगा.

मकर- नये मित्र बनेंगे जो आगे बढ़ने मे सहायक रहेंगे, आर्थिक कार्यो में समस्याओं का समाधान होगा, सुखद समाचार मिलने से प्रसननता होगी.

कुम्भ- लोग आपका व्यवहार देखकर हर संभव मदद को तैयार रहेंगे, कामकाज में मन लगेगा, प्रसन्नता रहेगी, दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा.

मीन- नए समझौते में घर के बुजुर्ग की सलाह उपयोगी रहेगी, मनोरंजक यात्रा होगी, आर्थिक मामलों में सावधानी रखें, जबावदारी का काम बनेगा.

SUDOKU 7413

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7412

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8